



श्री ऑल इंडिया श्वेताम्बर स्थानकवासी जैन कॉन्फ्रेंस-नई दिल्ली

का साप्ताहिक मुखपत्र

जैन प्रकाश



जैन प्रकाश सम्पादकीय कार्यालय
जैन भवन, 12, शहीद भगत सिंह मार्ग, गोल मार्किट, नई दिल्ली-01
Tel.: 011-23363729, 23365420 Mob.: 9019731906
E-mail: aissjc1906@gmail.com
Website: https://jainconference.org

सम्पादक : डॉ. अमित जैन
Mob. 9837394448, 9997889995
E-mail: amitrajain78@gmail.com



श्रमण संघीय प्रथम पट्टधर, जैन धर्म दिवाकर
आचार्य सहायद पूज्य श्री आत्माराम जी म.



श्रमण संघीय द्वितीय पट्टधर, जैन धर्म दिवाकर
आचार्य सहायद पूज्य श्री आनन्दकृष्ण जी म.



श्रमण संघीय तृतीय पट्टधर, जैन धर्म दिवाकर
आचार्य सहायद पूज्य श्री देवदत्त मुनि जी म.



श्रमण संघीय चतुर्थ पट्टधर, जैन धर्म दिवाकर
आचार्य सहायद पूज्य डॉ. श्री शिवमुनि जी म.

जून - चतुर्थ, अंक - 16

विक्रम संवत् - 2083

वीर संवत् - 2552

ईस्वी सन् - 2026

Address
Here



अनन्त सुख का स्रोत जीव आत्मा

- युग प्रधान आचार्य सहायद
पूज्य डॉ. श्री शिवमुनिजी म. सा.

जीवन में आनंद भरा है, आनंद सबमें घोल दो भक्ति संगीत की ये पंक्तियाँ एक पवित्र संदेश दे रही है। ये हृदय की पुकार है चित्त की भावदशा है इसमें मन, वचन, काया के पार साधना की विधि स्पष्ट दिखाई देती है। भगवान फरमाते हैं इस संसार में दुःख ही दुःख है जन्म, जरा, मरण, आधि, व्याधि सब दुःख ही दुःख है फिर संसार-सागर से कैसे पार हों? यह शरीर जो तुम्हें मिला है उसके भीतर आत्मा है उसमें अनंत आनंद, ज्ञान, दर्शन, सुख, शक्ति है। मानव जितना चाहे यश पाले फिर भी वह दुःखी है, आधि, व्याधि से घिरा हुआ है। आत्मा की शक्ति को वीतरागवाणी से जागृत करें तो उत्थान होगा।

जीवन में आनंद है सभी महापुरुषों के पास वह आनंद था वही आनंद हम सबके पास है। भगवान महावीर को 6 माह भोजन नहीं मिला फिर भी वे आनंदित थे। क्या आनंद भोजन, वस्त्र, आभूषण, पद, प्रतिष्ठा में है? उसमें आनंद नहीं केवल सुखाभास है। घर में आभूषण अधिक हो तो नींद नहीं आती सोना भी कहता है सो ना। संसार में लगता है सुख परन्तु वो सुखाभास है उसके पीछे दुःख की लम्बी कतार है। शाश्वत आनंद आत्मा में है। आचार्य मानसुंग को 48 तालों में बंद किया गया। सेठ सुदर्शन को सूती पर चढ़ाया गया फिर भी वे आनंदित थे। आनंद आत्मा का निजगुण है उस आनंद को महसूस करने के लिए हम शरीर व आत्मा की भिन्नता का अहसास करें। आज जो कुछ भी हमें मिला है सब हमारे कर्म से है, यह वीतरागवाणी कहती है। सम्मान, अपमान एक सिक्के के दो पहलू है।

हर स्थिति में आनंदित रहना ही आत्म-दृष्टि है। आत्म - दृष्टि से सब समान है। कोई छोटा बड़ा नहीं। आत्मा के अनंत आनंद को पहचानो। मोक्ष जाना है तो उस आनंद का अनुभव करना होगा। आत्म-ज्ञान भीतर है अनंत सुख अनंत आनंद भीतर है। आपका अस्तौ घर मोक्ष है अगर मोक्ष जाना है तो अरिहंत परमात्मा का हाथ पकड़ लो। उनकी चरण शरण को ग्रहण करो, वे ही तारने वाले हैं। अरिहंत की भक्ति, आराधना, प्रार्थना करते हुए जीवन की हर परिस्थिति में हम सभी आनंद में रहे, सबको आनंद में रहने की कला सिखाएं। व्यवहार की सभी मर्यादाएं निश्चय में हर अवस्था में आनंद में रहने के लिए हैं। संयम और त्याग के साथ हर श्वांस वीतरागता में बीते इसी हेतु हमारा पुरुषार्थ है। सबको वहाँ तक पहुँचाने में हम निमित्त बने। चातुर्मास नजदीक आ रहा है सभी साधु-साध्वीवृंद अपने-अपने चातुर्मास स्थल की ओर विहाररत है। सभी इस वर्ष के चातुर्मास में आत्मिक सुख की अनुभूति करते हुए श्रमण संघ की गरिमा एवं महिमा को बढ़ावै यही हार्दिक मंगल कामना।



अध्यक्षीय

परिवार : संस्कारों की प्रथम पाठशाला

- अतुल जैन - राष्ट्रीय अध्यक्ष
E-mail : ajvk1973@gmail.com

प्रिय बंधुओं, सादर जय जिनैन्द्र!

परिवार केवल साथ रहने वाले लोगों का समूह नहीं, बल्कि संस्कारों, मूल्यों और जीवन दृष्टि का वह केंद्र है जहाँ से व्यक्ति के व्यक्तित्व का निर्माण प्रारंभ होता है। समाज और राष्ट्र की शक्ति का आधार भी सुदृढ़ परिवार व्यवस्था ही होती है। यदि परिवार संस्कारित, सुसंगठित और मूल्यनिष्ठ होंगे, तो समाज भी स्वाभाविक रूप से सशक्त बनेगा।

आज का युग तीव्र परिवर्तन का युग है। विज्ञान और तकनीक ने जीवन को सुविधाजनक बनाया है, किन्तु इसके साथ अनेक नई चुनौतियाँ भी सामने आई हैं। परिवारों में संवाद का समय कम हुआ है, बच्चों का झुकाव डिजिटल माध्यमों की ओर बढ़ा है तथा जीवन की व्यस्तता के कारण पारिवारिक संबंधों की आत्मीयता प्रभावित होती दिखाई देती है। ऐसे समय में परिवार की भूमिका और अधिक महत्वपूर्ण हो जाती है।

बच्चों के जीवन में संस्कारों का प्रथम बीजारोपण परिवार में ही होता है। माता-पिता, दादा-दादी एवं परिवार के वरिष्ठजन अपने आचरण, व्यवहार और जीवन मूल्यों के माध्यम से नई पीढ़ी को दिशा प्रदान करते हैं। सत्य, अहिंसा, अनुशासन, सेवा, कठुणा और बड़ों के प्रति सम्मान जैसे गुण किसी पुस्तक से अधिक परिवार के वातावरण से सीखने को मिलते हैं।

जैन दर्शन सदैव पारिवारिक सौहार्द, संयम, मर्यादा और पारस्परिक सम्मान का संदेश देता है। परिवार में यदि संवाद, विश्वास और सहयोग का वातावरण बना रहे तो अनेक समस्याओं का समाधान सहज रूप से हो सकता है। साथ बैठना, विचार साझा करना, धार्मिक एवं सामाजिक गतिविधियों में परिवार सहित सहभागिता करना तथा बच्चों को संस्कृति और परंपराओं से परिचित कराना समय की आवश्यकता है।

आज हम सभी का दायित्व है कि आधुनिकता को अपनाते हुए भी अपने मूल्यों और संस्कारों को सुरक्षित रखें। हमें यह स्मरण रखना होगा कि बच्चों को केवल सुविधाएँ नहीं, बल्कि संस्कारों की विरासत भी प्रदान करनी है। परिवार में प्रेम, विश्वास, त्याग और परस्पर सम्मान की भावना ही जीवन को सार्थक बनाती है। यदि प्रत्येक परिवार अपने दायित्वों का सजगता से निर्वहन करे और नई पीढ़ी को नैतिक मूल्यों से जोड़ने का प्रयास करे, तो एक सशक्त समाज और आदर्श राष्ट्र का निर्माण स्वतः संभव हो जाएगा। आइए, हम सभी अपने परिवारों को संस्कार, सदाचार और आत्मीयता का केंद्र बनाकर आने वाली पीढ़ियों के लिए एक उज्ज्वल एवं प्रेरणादायी भविष्य का निर्माण करें।

सम्पादकीय

संवेदना बनाम राजनीति :

जैन साधुओं के पैदल मार्ग पर बनाई गई सफेद पेंट की पट्टी से उपजा विवाद

- डॉ. अमिताश जैन - राष्ट्रीय महाअंश्री



मुंबई के घाटकोपर क्षेत्र में जैन साधु-साध्वियों के पैदल विहार मार्ग पर बनाई गई सफेद पट्टी को लेकर उत्पन्न विवाद ने एक बार फिर यह प्रश्न खड़ा कर दिया है कि क्या भारत में तपस्या, त्याग और धार्मिक सह-अस्तित्व की परंपराओं को राजनीतिक चश्मे से देखा जाएगा या मानवीय संवेदना के आधार पर समझा जाएगा।

10 जून 2026 को टाइम्स ऑफ इंडिया ने अपनी रिपोर्ट में उल्लेख किया कि घाटकोपर की एक आवासीय सोसायटी में नंगे पैर विहार करने वाले जैन मुनियों की सुविधा के लिए बनाए गए सफेद पेंट से रंग कर बनाए गए मार्ग को लेकर राजनीतिक विवाद खड़ा हुआ, जिसके बाद स्थानीय प्रशासन ने तनाव कम करने के उद्देश्य से उस मार्ग को पुनः रंग दिया। वहीं उसी दिन पीटीआई की रिपोर्ट, जिसे द प्रिंट ने प्रकाशित किया, में महाराष्ट्र नवनिर्माण सेना (मनसे) के नेता संदीप देशपांडे द्वारा इस व्यवस्था को "सांस्कृतिक आतंकवाद" कहे जाने और संबंधित लोगों के विरुद्ध आक्रामक चेतावनी दिए जाने का उल्लेख किया गया। यह तथ्य स्वयं इस विवाद के राजनीतिक स्वरूप को स्पष्ट करता है।

यहाँ मूल प्रश्न यह है कि क्या किसी तपस्वी साधु के पैरों को भीषण गर्मी से बचाने के लिए की गई अस्थायी व्यवस्था को वास्तव में सामाजिक या सांस्कृतिक वर्चस्व का प्रतीक माना जा सकता है?

जैन साधु-साध्वियाँ भारतीय आध्यात्मिक परंपरा के उन विलक्षण प्रतिनिधियों में हैं जो आज भी नंगे पैर चलते हैं, वाहन का उपयोग नहीं करते, धन-संपत्ति का त्याग करते हैं और अहिंसा के सिद्धांत का अक्षरशः पालन करते हैं। जब सामान्य नागरिक गर्मी से बचने के लिए जूते, वाहन और वातानुकूलित साधनों का उपयोग करता है, तब जैन साधु तपती डामर की सड़कों पर नंगे पैर विहार करते हैं। ऐसे में यदि समाज उनके मार्ग पर अस्थायी रूप से सफेद रंग कर देता है ताकि तापमान कुछ कम हो सके, तो इसे किसी प्रकार के अधिकार प्रदर्शन या अतिक्रमण का रूप देना तर्कसंगत प्रतीत नहीं होता।

दुर्भाग्यपूर्ण तथ्य यह है कि पिछले कुछ वर्षों में महाराष्ट्र की राजनीति में कुछ ऐसे स्वर उभरे हैं जो समय-समय पर जैन समाज को अनावश्यक विवादों में घसीटते रहे हैं। महाराष्ट्र नवनिर्माण सेना के अध्यक्ष राज ठाकरे और उनके कुछ नेताओं द्वारा प्रयुक्त भाषा अनेक अवसरों पर सामाजिक समरसता की भावना के अनुकूल नहीं रही है। लोकतंत्र में आलोचना का अधिकार सभी को है, परंतु किसी शांतिप्रिय और राष्ट्रनिर्माण में अग्रणी समुदाय को बार-बार राजनीतिक निशाने पर लेना लोकतांत्रिक संवाद को कमजोर करता है। (शेष पृष्ठ 5 में)



M.J. Home Furnishing

Manufacturer of Bedsheet, Mink Blanket, Bright Velvet
Dohar, Polar Blanket, AC Quilt Fabric

Alipur Khalsa, Khotpura Road, Kohand, Karnal

Mob: 8053018933, 8727890101

E-mail: mjhome025@gmail.com

Vijay Jain

National Chairman - Jain Conference, New Delhi



श्रमण संघीय साधु सम्मेलनों के पावन प्रसंग...

- उत्तर भारतीय प्रवर्तक पृ. श्री शुभद्रसिंह जी म.

श्री वर्धमान स्थानकवासी जैन श्रमण संघ के पदाधिकारी साधु-साध्वीवृंद
युगप्रधान, ध्यानयोगी, आचार्य सम्राट् परम पूज्य श्री शिवमुनिजी म.सा.
आगमज्ञाता प्रज्ञाहर्षि युवाचार्य परम पूज्य श्री महेन्द्रकृष्णिजी म.सा.

उपाध्याय मण्डल

परम श्रद्धेय डॉ. श्री विशालमुनिजी म.सा. 'वाचनाचार्य'
परम श्रद्धेय श्री रमेशमुनिजी म.सा.
परम श्रद्धेय डॉ. श्री जितेन्द्रमुनिजी म.सा.
परम श्रद्धेय श्री प्रवीणकृष्णिजी म.सा.
परम श्रद्धेय श्री रवीन्द्रमुनिजी म.सा.
परम श्रद्धेय डॉ. श्री गीतममुनिजी म.सा. 'प्रवम'

प्रवर्तक मण्डल

परम श्रद्धेय श्री कुल्लनकृष्णिजी म.सा.
परम श्रद्धेय श्री प्रकाशमुनिजी म.सा. 'निर्भय'
परम श्रद्धेय डॉ. श्री राजेन्द्रमुनिजी म.सा.
परम श्रद्धेय श्री सुकनमुनिजी म.सा.
परम श्रद्धेय श्री विजयमुनिजी म.सा.
परम श्रद्धेय श्री सुप्रभमुनिजी म.सा.
परम श्रद्धेय श्री आशीषमुनिजी म.सा.

मंत्री मण्डल

परम श्रद्धेय श्री शिरीषमुनिजी म.सा. (प्रमुख मंत्री)
परम श्रद्धेय श्री कमलमुनिजी म.सा. 'कमलेश' (संय-नीति एवं जनसम्पर्क)

सलाहकार मण्डल

परम श्रद्धेय श्री सुरेशमुनिजी म.सा. 'शास्त्री'
परम श्रद्धेय श्री तारककृष्णिजी म.सा.
परम श्रद्धेय श्री रमणीकमुनिजी म.सा.
परम श्रद्धेय श्री दिनेशमुनिजी म.सा.
परम श्रद्धेय डॉ. श्री रामपुनिजी म.सा. 'निर्भय'

प्रवर्तिनी मण्डल

परम श्रद्धेया महासती डॉ. श्री चंदनाजी म.सा.
परम श्रद्धेया महासती श्री सतिताजी म.सा.
परम श्रद्धेया महासती डॉ. श्री सुप्रभाजी म.सा.
परम श्रद्धेया महासती श्री सुधाजी म.सा.
परम श्रद्धेया महासती डॉ. श्री प्रतिभाकंठरी म.सा.

श्री ऑल इंडिया श्वेताम्बर स्थानकवासी जैन कॉन्फ्रेंस-विश्वस्त मण्डल

श्री रमेश मण्डारी जैन, इन्दौर - चेयरमैन	93021 03817
श्री बाबूलाल राना जैन, बैंगलोर	93434 83838
श्री स्मितालाल लुक्कड़ जैन, पूना	98505 00015
श्री सुभाष ओसवाल जैन, नई दिल्ली	98110 45440
श्री अतुल जैन, नई दिल्ली	98110 75336
श्री आनंदमल ठलगाणी जैन, चेन्नई	98410 30035
डॉ. अमिताभ जैन, बड़ौत	98373 94448
श्री प्रकाश धारवाल जैन, पुणे	98222 42795
श्री अशोक मेहता जैन, सूरत	98251 19082
श्री उममचंद गांधी जैन, इचलकरंजी	93260 22525
श्री विनय कुमार जैन, पानीपत	83968 00000
श्री पदमचंद कांकरिया जैन, चेन्नई	98841 67400
श्री राजीव जैन 'सी.ए.', दिल्ली	98110 42280
श्री कालिकुमार लोढ़ा जैन, छत्रपति संभाजीनगर	82862 00000
श्री संजीव जैन, लुधियाना	98140 25325
श्री सुनील बापना जैन, योड़नद्री	98505 67010

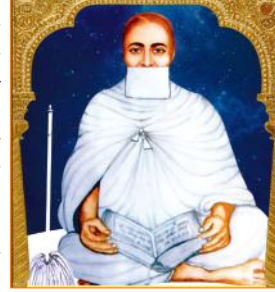
श्री वर्धमान स्थानकवासी जैन श्रमण संघ की मातृसंस्था
श्री ऑल इंडिया श्वेताम्बर स्थानकवासी जैन कॉन्फ्रेंस, नई दिल्ली
सम्माननीय पदाधिकारीगण-कार्यकाल वर्ष : 2025-27

राष्ट्रीय अध्यक्ष : श्री अतुल जैन, दिल्ली	98110 75336
राष्ट्रीय महामंत्री : प्रो. डॉ. अमिताभ जैन, बड़ौत	98373 94448
राष्ट्रीय कोषाध्यक्ष : श्री विनयकुमार जैन, पानीपत	83968 00000
राष्ट्रीय चेयरमैन : श्री विजय जैन, पानीपत	98966 00022
राष्ट्रीय वाईस चेयरमैन : श्री नरेश बोहरा जैन, मुंबई	76665 40600
राष्ट्रीय कार्याध्यक्ष : श्री जसवंत जैन, दिल्ली	98104 35108
राष्ट्रीय सह-कोषाध्यक्ष : श्री रजनीश जैन 'राव', दिल्ली	98116 14567

प्रसंग श्रमण संघीय अजमेर मुनि सम्मेलन का है, उसमें सम्मिलित होने के लिए अन्य संतों के अतिरिक्त पूज्य गुरुदेव योगीराज श्री रामजी लाल जी महाराज पधारो। वहाँ एक बड़ी हवेली में संतों के ठहरने की व्यवस्था हुई। पूज्य गुरुदेव योगीराज जी महाराज भी वही ठहरे, पहली रात थी। गुरु महाराज ने सदैव की तरह उस रात भी ध्यान किया। उनका ध्यान प्रातः 3:00 बजे के आस-पास संपन्न हुआ। उन्होंने देखा कि दरवाजे के पास कोई आया और झाँक कर वापस लौट गया। सोचा कि कोई संत लघुशंका के लिए उठे होंगे और भूल से इधर आ गए होंगे। अगली रात फिर ऐसा ही हुआ और फिर से गुरु महाराज ने यही सोचा। तीसरी रात फिर जब ऐसा ही होने लगा तो गुरु महाराज तत्काल उठ गए। देखा तो पूज्य श्री अमोलक ऋषि जी म. थे।

गुरुदेव योगीराज जी ने पूज्य श्री को वंदना की, पूछा- 'महाराज! क्या बात है? आओ! पधारो! कृपा करो!' पूज्य श्री ने पूछा- 'आप कितने बजे उठते हो?' गुरु महाराज बोले- 'दो ढाई बजे के आस-पास!' पूज्य श्री बोले- 'अच्छा बहुत जल्दी उठ जाते हो! इतनी जल्दी उठने का कोई विशेष कारण?' गुरु महाराज ने बताया- 'जी मैं रोज ध्यान करता हूँ। पूज्य श्री को आश्चर्य हुआ अच्छा रोज ध्यान करते हो?' गुरुदेव योगीराज जी बोले- 'जी!'

यह तो बहुत अच्छी बात है! संत अगर विशेष साधना करें तो इसका मतलब यह है कि उसे संयम की साधना में आनंद आ रहा है। जानकर बड़ा अच्छा लगा पूज्य श्री अमोलककृष्णि जी बोले! तुम सोच रहे होंगे कि मैं इतनी सुबह यहाँ करने क्या आया? बात दरअसल यह है कि मैं रोज सुबह उठकर सारे संतो को वंदन करता हूँ। संत चाहे छोटा हो अथवा बड़ा, चाहे इस परंपरा का हो, चाहे उस परंपरा का, सबको वंदना करना मेरा सुख है!



उसी के लिए मैं तुम्हारे कमरे में भी आया करता था! परंतु तुम बैठे मिले इसलिए दो बार आकर भी लौट गया! आज तीसरी बार भी वही घटित हुआ! मुनि जी! तुम्हें प्रत्याख्यान है कि मेरी यह बात किसी को बताना मत! मैं तुम्हारे कमरे में भी आया करूँगा! पूज्य श्री ने कहा तो गुरुदेव योगीराज ने हाथ जोड़े - 'महाराज मुझे तो क्षमा करना!'

तुम बैठे होते हो इसलिए तुम्हें वंदना नहीं करूँगा! लेकिन किसी और संत को वंदना करूँ तो उसे तुम बताना मत! 'पूज्य श्री ने कहा तो गुरु महाराज का उत्तर था-'' जी महाराज मैं आपको अंतराय नहीं दूँगा! पूज्य श्री लौट गए! उसके बाद वह प्रतिदिन वंदना करने आने लगे! गुरु महाराज उनको चुपचाप देखा करते! एक दिन व्याख्यान वाचस्पति श्री मदनलाल जी महाराज ने पूछा- योगीराज! यह सुबह-सुबह कौन आया करता है वंदना करने? 'गुरु महाराज बोले-'' जी आता होगा कोई! आपको क्या लेना है! वाचस्पति जी ने कहा- भाई! पता तो चले आखिर है कौन! गुरु महाराज का कहना था- मेरी मुश्किल है मैं आपको बता नहीं सकता! आपको जानना हो तो आप खुद चार-पौने चार बजे खुद जाकर देख लेना पर मैं कुछ नहीं बता सकता! वाचस्पति जा चुप हो गए!

पूज्य श्री अमोलककृष्णि जी महाराज कि यह बात संतों में फैल गई! सभी जान गए! अनेक संत पूज्य श्री के चरणों में आए! और उनके इस तरह वंदना करने पर आपत्ति की। पूज्य श्री ने फरमाया-बड़ा छोटा तो व्यवहार की बात है! निश्चय में क्या पता कौन सी आत्मा कितनी निर्मल और ऊँची हो! मैं तो उस आत्मा को वंदन कर अपनी कर्म निर्जरा करता हूँ! ऐसे महान संत पूज्य श्री अमोलक ऋषि जी महाराज के चरणों में कोटि-कोटि वंदन !

योग : स्वस्थ तन, शांत मन और श्रेष्ठ जीवन का दिव्य मार्ग

- पू. श्री सहदेव मुनि जी म.

योग भारत की प्राचीन और अमूल्य सांस्कृतिक धरोहर है। यह केवल शारीरिक व्यायाम नहीं, बल्कि शरीर, मन और आत्मा के संतुलन का विज्ञान है। आज की भागदौड़ भरी जीवनशैली में तनाव, चिंता और विभिन्न रोगों से बचने के लिए योग एक प्रभावी और प्राकृतिक उपाय बनकर उभरा है। इसी महत्त्व को देखते हुए प्रतिवर्ष 21 जून को पूरे विश्व में अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस मनाया जाता है।

योग दिवस का इतिहास : भारत के प्रयासों से संयुक्त राष्ट्र महासभा ने 11 दिसंबर 2014 को 21 जून को अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस घोषित किया। पहली बार यह दिवस 21 जून 2015 को विश्वभर में उत्साहपूर्वक मनाया गया। 21 जून वर्ष का सबसे लंबा दिन होता है, जिसे आध्यात्मिक दृष्टि से भी विशेष माना गया है।

योग का महत्व : योग मनुष्य के संपूर्ण विकास का मार्ग प्रशस्त करता है। नियमित योगाभ्यास से शरीर स्वस्थ, मन शांत और विचार सकारात्मक बनते हैं। योग हमें आत्मनुशासन, संयम और संतुलित जीवन जीने की प्रेरणा देता है। योग के प्रमुख लाभ 1. शरीर को स्वस्थ और सुदृढ़ बनाता है। 2. मानसिक तनाव और चिंता को कम करता है। 3. एकाग्रता एवं स्मरण शक्ति बढ़ाता है। 4. रोग प्रतिरोधक क्षमता को मजबूत करता है। 5. जीवन में सकारात्मक ऊर्जा का संचार करता है। 6. आत्मविश्वास

और आत्मबल में वृद्धि करता है।

वर्तमान समय में योग की आवश्यकता : आज की आधुनिक जीवनशैली में अधिकांश लोग शारीरिक गतिविधियों से दूर होते जा रहे हैं। अनियमित दिनचर्या, तनाव और प्रदूषण के कारण अनेक बीमारियाँ बढ़ रही हैं। ऐसे समय में योग एक सरल, सुलभ और प्रभावशाली उपाय है, जो बिना किसी दुष्प्रभाव के स्वस्थ जीवन प्रदान करता है।

योग और आध्यात्मिकता : योग केवल शरीर को स्वस्थ रखने का साधन नहीं, बल्कि आत्मिक उन्नति का भी मार्ग है। योग के माध्यम से व्यक्ति अपने भीतर की शांति, संतोष और आत्मचेतना का अनुभव करता है। महर्षि पतंजलि द्वारा प्रतिपादित अष्टांग योग जीवन को अनुशासित और सार्थक बनाने की दिशा प्रदान करता है।

अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस हमें स्वस्थ, संतुलित और सुखमय जीवन जीने की प्रेरणा देता है। योग को केवल एक दिवस तक सीमित न रखकर अपनी दैनिक दिनचर्या का हिस्सा बनाना चाहिए। यदि प्रत्येक व्यक्ति नियमित योगाभ्यास करे, तो वह न केवल स्वयं स्वस्थ रहेगा, बल्कि एक स्वस्थ और जागरूक समाज के निर्माण में भी योगदान देगा। "योग केवल व्यायाम नहीं, बल्कि स्वस्थ शरीर, शांत मन और श्रेष्ठ जीवन का आधार है।" - योग अपनाएँ, स्वास्थ्य और सुख को जीवन में लाएँ।

विश्व पितृ दिवस पर विशेष

पिता और संतान हमेशा हर बात पर एकमत हों, यह आवश्यक नहीं है, लेकिन उनके हृदय हमेशा एक-दूसरे से जुड़े रहते हैं। चाहे कोई व्यक्ति कितना भी बड़ा क्यों न हो जाए, उसे अपने पिता के स्नेह, मार्गदर्शन और आशीर्वाद की आवश्यकता कभी समाप्त नहीं होती। पिता का प्रेम अक्सर शब्दों से कम और अपने कर्मों, त्याग और जिम्मेदारियों से अधिक व्यक्त होता है। 'पिता न तो हमें पीछे रोकने वाला लंगर हैं और न ही हमें मंजिल तक पहुँचाने वाली पाल, वे एक मार्गदर्शक प्रकाश हैं, जिनका प्रेम हमें सही दिशा दिखाता है।' पिता का स्नेह, उनका अनुभव और उनके संस्कार जीवन की सबसे अनमोल धरोहर हैं। उनके प्रति सम्मान, कृतज्ञता और प्रेम व्यक्त करने का अवसर कभी न छोड़ें।

- साभार : व्हाट्सएप ग्रुप

श्री मरुधर केसरी गुरुध्वज नमः

देवानुप्रिय सेठ सा श्री माणकचंद सा श्रीमती रूप लता जी बोहरा की पावन स्मृति में

नरेश - बबिता, हर्ष - साधना, सौ. कां. करिश्मा, थिया बोहरा जैन - मुम्बई - जोधपुर

HaloVerse Entertainment Pvt Limited. Mumbai

Jupiter City Developers India Pvt. Ltd. Mumbai

XL Energy Ltd.

नरेश बोहरा जैन

राष्ट्रीय वाईस चेयरमैन - जैन कॉन्फ्रेंस, नई दिल्ली

कार्याध्यक्ष - पावन धाम, जैतारण, राजस्थान

7666540600 @Jainn07@gmail.com

जय गुरु रूप

जय गुरु मरुधर केसरी

जय गुरु सुकन

कोटिशः वंदन नमन

कथा-कहानी योगिराज की कहानियाँ-प्रवर्तक पृ. श्री मुष्ट मुनि

ददी का चमत्कार



एक राजा था। वह प्रजा का बड़ा हित-चिन्तक था। अनेक बार वेष बदलकर रात में घूमा करता। नागरिकों के सुख-दुःख की बातें अपने कानों से सुनता। फिर उनके दुःख दूर करता।

एक बार राजा, रात को वेष बदल कर नगर निरीक्षण को निकला। गली के एक नुक्कड़ पर उसे चार व्यक्ति मिले। वे परस्पर मंत्रणा कर रहे थे। राजा भी वहाँ पहुँच गया।

“तुम कौन हो ?”

“और तुम कौन ?”

“पहले तुम अपना परिचय दो !”

“जो तुम हो, वही मैं हूँ,” राजा बोला।

उन व्यक्तियों ने कहा-“हम तो चोर हैं।” चोरी करने की योजना बना रहे हैं। और तुम ?

“मैं भी चोर हूँ। इसी काम से निकला हूँ। अच्छा होगा-तुम मुझे भी साथ ले लो।”

“ऐसे नहीं। हम तो जिस व्यक्ति में कोई गुण होता है, उसे अपना साथी बनाते हैं। तुम्हारे में कोई विशेषता हो तो बताओ। हम अवश्य अपने में मिला लेंगे।”

चोर अपना परिचय देने लगे-

पहला-“मैं संध लगाता हूँ, परन्तु आवाज नहीं होने देता। यह मेरी विशेषता है।”

दूसरा-“मुझे अंधेरे में दिखाई पड़ता है। यह मेरा गुण है।”

तीसरा-“मैं संधक बताने में - धन कहाँ है। यह विशेषता मेरे अलावा तीनों में नहीं है।”

चौथा-“मैं किसी की आवाज एक बार सुन लूँ तो हजारों व्यक्तियों में भी आवाज पहचान लेता हूँ।”

अब तुम अपना परिचय बताओ। चोरों की ओर से प्रश्न था, राजा से।

राजा ने उत्तर दिया-“मेरी दाढ़ी में चमत्कार है। मैं जब इसे हिला देता हूँ तो जिस चोर को फाँसी भी दी जा रही हो, तो वह रुक जाती है। चोर हमेशा के लिए बरी हो जाता है।”

राजा की बात चोरों को अच्छी लगी और उन्होंने राजा को अपने में शामिल कर लिया। वे अब सब के सब राजा के ही महल में घुसे। चोरों ने अपना कौशल दिखाया। विपुल मात्रा में धन हाथ लगा। पाँच हिस्सों में उसे बाँटा गया। सब अपनी-अपनी राह चले गए।

सुबह शोर मचा। पुलिस ने भाग-दौड़ की। चारों को पकड़ लिया गया। अन्ततः न्यायाधीश ने उन्हें फाँसी की सजा सुना दी।

नगर के बाहर हजारों लोगों के सम्मुख उन्हें फाँसी दी जानी थी। राजा भी वहाँ उपस्थित था। चोरों ने कहा-“हम सबने अपना कौशल दिखलाया पर हमारे पाँचवें साथी ने कुछ नहीं किया। यह खेदजनक है।” इतने में एक चोर ने कहा-यह राजा ही हमारा पाँचवाँ साथी होना चाहिए। अंधेरे में देखने वाले चोर ने कहा-हाँ, यही है वह व्यक्ति।

चोरों ने राजा से कहा-अब तुम अपना चमत्कार दिखाओ।

जब फाँसी का आदेश जारी हुआ तो अन्तिम स्वीकृति राजा की चाहिए थी। राजा ने दाढ़ी हिला दी और फाँसी टल गई। राजा ने उनसे अकेले में कहा-फिर से कभी चोरी मत करना। तुम्हारी मंडली में शामिल होने का मेरा यही उद्देश्य था। अब मैं तुम्हें अपने यहाँ काम देता हूँ।

जैन दर्शन में योग : आत्मा से परमात्मा की यात्रा

- अशोक रांका जैन-वैय्यावच्च योजना राष्ट्रीय अध्यक्ष, बैंगलोर



आज सम्पूर्ण विश्व योग को स्वास्थ्य, मानसिक शांति और संतुलित जीवन के साधन के रूप में स्वीकार कर रहा है। अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस इस बात का प्रमाण है कि भारत की प्राचीन योग परंपरा अब विश्व मानवता की धरोहर बन चुकी है। परंतु जैन दर्शन में योग की अवधारणा केवल शारीरिक व्यायाम या स्वास्थ्य तक सीमित नहीं है। यहाँ योग आत्मा के शुद्ध स्वरूप की प्राप्ति का मार्ग है।

योग का वास्तविक अर्थ है-जुड़ना। संसार में सामान्यतः योग को शरीर और मन के संतुलन के रूप में समझा जाता है, जबकि जैन दर्शन में योग का सर्वोच्च स्वरूप आत्मा का अपने शुद्ध स्वरूप से जुड़ना है। यही कारण है कि जैन धर्म में योग का अंतिम लक्ष्य मोक्ष और आत्मबोध माना गया है।

जैन आगमों में योग, जैन दर्शन में ‘योग’ शब्द का उल्लेख अत्यंत प्राचीन है। तत्त्वार्थ सूत्र में कहा गया है-‘मनः वचन कायानां योगः’ अर्थात् मन, वचन और शरीर की प्रवृत्तियों का नाम योग है। जैन दर्शन के अनुसार मनुष्य निरंतर तीन स्तरों पर सक्रिय रहता है-‘मन से विचार करता है, वाणी से बोलता है, शरीर से कर्म करता है, इन्हीं तीनों की शुद्धि योग का आधार है।

भगवान महावीर : योग के महान साधक - भगवान महावीर का सम्पूर्ण जीवन योग की सर्वोच्च साधना का उदाहरण है। उन्होंने 12 वर्ष 6 माह तक कठोर ध्यान किया, विपरीत परिस्थितियों में समता बनाए रखी, मौन और आत्मनिरीक्षण का अभ्यास किया, राग और द्वेष पर विजय प्राप्त की, महावीर ने बाहरी संसार को बदलने का नहीं, स्वयं को बदलने का मार्ग दिखाया। उनका संदेश था-‘अपना सो परम्पा’ अर्थात् आत्मा ही परमात्मा बनने की क्षमता रखती है। यही जैन योग का मूल सिद्धांत है। जैन योग और पतंजलि योग में अंतर, दोनों का लक्ष्य आत्मिक विकास है, लेकिन दृष्टिकोण में अंतर है।

सामान्य योग : शरीर से प्रारंभ, आसन, प्राणायाम, ध्यान, जैन योग, आत्मा से प्रारंभ, समता, संयम, ध्यान, आत्मदर्शन, कर्मक्षय, जैन योग में आसनों की अपेक्षा भावों की शुद्धि को अधिक महत्व दिया गया है।

जैन धर्म के पाँच योग सूत्र :

1. अहिंसा, अहिंसा जैन योग की आधारशिला है। जिस मन में हिंसा है, वह कभी शांत नहीं हो सकता। अहिंसा का अर्थ केवल किसी को न मारना नहीं है। अहिंसा का अर्थ है-किसी को दुःख न देना, क्रोध न करना, कटु वचन न बोलना, द्वेष न रखना।

2. संयम, संयम जैन योग का दूसरा आधार है। संयम का अर्थ है-इच्छाओं पर नियंत्रण, इन्द्रियों पर नियंत्रण, जीवन में मर्यादा, आज की उपभोक्तावादी संस्कृति में संयम की आवश्यकता पहले से अधिक है।

3. अपरिग्रह, संसार की अधिकांश समस्याएँ संग्रह वृत्ति से उत्पन्न होती हैं। जितना अधिक संग्रह, उतनी अधिक चिंता। जितनी

अधिक अपेक्षाएँ, उतनी अधिक तनाव। अपरिग्रह मानसिक शांति का महान सूत्र है।

4. समता, भगवान महावीर का सम्पूर्ण दर्शन समता पर आधारित है। सुख मिले या दुःख, मान मिले या अपमान, लाभ मिले या हानि-जो समभाव में रहता है वही योगी है।

5. ध्यान, जैन दर्शन में ध्यान को मुक्ति का द्वार कहा गया है।

ध्यान का उद्देश्य : मन को रोकना नहीं, मन को देखना है, यही साक्षीभाव है।

समाधिक : जैन धर्म का वैज्ञानिक योग, यदि जैन धर्म की किसी एक साधना को योग का सर्वश्रेष्ठ स्वरूप कहा जाए तो वह समाधिक है। समाधिक का अर्थ है-‘समभाव में स्थित होना।’ 48 मिनट तक न मित्र, न शत्रु, न लाभ, न हानि, केवल द्रष्टा बनकर रहना। आज विश्व जिस ‘माइंडफुलनेस’ की चर्चा कर रहा है, उसका उत्कृष्ट स्वरूप जैन परंपरा में हजारों वर्षों से विद्यमान है।

प्रेक्षाध्यान : आधुनिक युग की योग साधना, आचार्य तुलसी एवं आचार्य महाप्रज्ञ द्वारा विकसित प्रेक्षाध्यान ने जैन योग को आधुनिक भाषा में प्रस्तुत किया।

प्रेक्षाध्यान का आधार : श्वास पर ध्यान, शरीर का अवलोकन, भावों का निरीक्षण, चेतना का विकास, यह तनाव मुक्ति और मानसिक संतुलन का प्रभावी माध्यम सिद्ध हुआ है।

कायोत्सर्ग : शरीर से परे जाने की साधना, कायोत्सर्ग का अर्थ है-शरीर के प्रति ममत्व छोड़कर आत्मा में स्थित होना। जैन साधना में इसे अत्यंत महत्वपूर्ण माना गया है। कायोत्सर्ग सिखाता है-‘मैं शरीर नहीं हूँ, मैं शुद्ध आत्मा हूँ।’

योग और स्वास्थ्य : जैन योग केवल मोक्ष की बात नहीं करता, बल्कि जीवन को भी संतुलित बनाता है।

इसके लाभ : तनाव में कमी, एकाग्रता में वृद्धि, सकारात्मक सोच, क्रोध नियंत्रण, बेहतर निर्णय क्षमता, मानसिक शांति, आज के समय में जैन योग की प्रासंगिकता, आज मानवता जिन समस्याओं से जूझ रही है-तनाव, अवसाद, हिंसा, लालच, असहिष्णुता, उनका समाधान जैन योग के सिद्धांतों में निहित है।

यदि व्यक्ति : प्रतिदिन ध्यान करें, समाधिक करें, अहिंसा अपनाएँ, अपरिग्रह का अभ्यास करें, समता विकसित करें, तो उसका जीवन बदल सकता है। योग दिवस केवल शरीर को स्वस्थ बनाने का अवसर नहीं, बल्कि स्वयं को पहचानने का निमंत्रण है। भगवान महावीर का योग हमें सिखाता है कि वास्तविक यात्रा बाहर की नहीं, भीतर की है। जब मन शांत होता है, भाव शुद्ध होते हैं, और आत्मा स्वयं को पहचानने लगती है-तभी वास्तविक योग घटित होता है। योग का अंतिम लक्ष्य शरीर की लचक नहीं, बल्कि चेतना की जागृति है। महावीर का योग हमें स्वस्थ ही नहीं, जागृत भी बनाता है।

भाव महत्वपूर्ण है या भव्यता?

- डॉ. सुजीव रणवत जैन

धार्मिक आयोजनों की भव्यता समाज में उत्साह और सहभागिता का वातावरण बनाती है। सुंदर व्यवस्थाएँ, विशाल आयोजन और सामूहिक उपस्थिति अपने आप में गलत नहीं हैं। वे श्रद्धा की अभिव्यक्ति भी हो सकते हैं।

लेकिन प्रश्न तब उठता है, जब भव्यता भाव पर भारी पड़ने लगे। जब चर्चा श्रद्धा से अधिक खर्च की होने लगे, साधना से अधिक व्यवस्थाओं की होने लगे और धर्म का मूल्य उसकी सादगी के बजाय उसकी चमक-दमक से आँका जाने लगे, तब ठहरकर सोचने की आवश्यकता होती है।

धर्म का सार बाहरी वैभव में नहीं, बल्कि भीतर के भाव में छिपा होता है। एक सच्ची प्रार्थना, निष्कपट सेवा और विनम्र हृदय का मूल्य किसी भी प्रदर्शन से कहीं अधिक होता है। भव्यता तब तक सुंदर है, जब तक वह भाव की अभिव्यक्ति बनी रहे। लेकिन यदि वह प्रतिस्पर्धा, प्रतिष्ठा या प्रदर्शन का माध्यम बन जाए, तो धर्म का मूल उद्देश्य धुंधला पड़ने लगता है।

हमें भव्यता का विरोध नहीं करना है, बल्कि यह सुनिश्चित करना है कि धर्म का केंद्र भाव ही बना रहे। जहाँ भाव जीवित रहता है, वहीं धर्म अपनी गरिमा बनाए रखता है।

प्रेस्टीज

प्रतिबद्ध है भारत को समृद्ध एवं प्रबुद्ध बनाने के लिये अपने सर्वश्रेष्ठ सोया प्रोटीन सोया तेल, वनस्पति, सोया बड़ी गैरू का आटा मैदा, रवा, सूजी और उत्कृष्ट शिक्षा K.G. से Ph.D. के द्वारा भारत को जरूरत है स्वर्ण पदकों की ओलम्पिक और नोबल पुरस्कार विजेताओं की स्वस्थ व प्रबुद्ध भारत के लिये प्रेस्टीज सोया खाद्य और समग्र शिक्षा बेहतर भोजन - बेहतर शिक्षा - बेहतर राष्ट्र



प्रेस्टीज फूड्स लिमिटेड	प्रेस्टीज इंस्टिट्यूट ऑफ मैनेजमेंट एंड रिसर्च, इंदौर (अंडर ग्रेजुएट्स)
प्रेस्टीज फीड मिल्स लिमिटेड	प्रेस्टीज इंस्टिट्यूट ऑफ मैनेजमेंट एंड रिसर्च, इंदौर (पोस्ट ग्रेजुएट्स)
प्रेस्टीज सोया इंडस्ट्रीज	प्रेस्टीज इंस्टिट्यूट ऑफ मैनेजमेंट, ग्वालियर
प्रेस्टीज फ़ोटेक लिमिटेड	प्रेस्टीज इंस्टिट्यूट ऑफ मैनेजमेंट, देवास
प्रेस्टीज फीड मिल्स	प्रेस्टीज इंस्टिट्यूट ऑफ इंजीनियरिंग एंड साइंस, इंदौर
प्रेस्टीज फैब्रिकेटर्स प्रा. लिमिटेड	प्रेस्टीज पब्लिक स्कूल, इंदौर

प्रेस्टीज ग्रुप ऑफ इन्डस्ट्रीज एंड इंस्टीट्यूट्स

स्टार एक्सपोर्ट हाउस (भारत सरकार द्वारा मान्यता प्राप्त) आई.एस.ए. 9000 2001 प्रमाणिक पृष्ठ

30, Jaora Compound, M.Y.H. Road, Indore - 452001, M.P.

Phone: 0731-4011111, 4041111 Fax: 4011107, 2704455 E-mail: info@prestigeindia.com Website: prestigeindia.com



प्रमाद से प्रमोद

सजग जीवन की साधना

पुस्तक से साभार

लेखक-गुरुभक्त अतुल जैन

(गतांक से आगे)

अध्याय 23

नसों का कसाव और सूजन - दबे हुए तनाव का परिणाम

(गहन विस्तार)

अब तक हमने देखा कि कैसे अहंकार, कर्ताभाव, नियंत्रण और भय शरीर के विभिन्न केंद्रों में उतरते हैं। अब प्रश्न यह है—जब यह तनाव लंबे समय तक बना रहे, तो शरीर पर उसका क्या प्रभाव होता है? नसों का कसाव, लगातार जकड़न, सूक्ष्म सूजन (Inflammation), थकान—ये केवल शारीरिक घटनाएँ नहीं हो सकती। अक्सर ये लंबे समय से संचित तनाव की अभिव्यक्ति भी हो सकती हैं।

1. तनाव का जैविक स्वरूप : जब व्यक्ति मानसिक तनाव में होता है, तो शरीर Cortisol और Adrenaline जैसे हार्मोन छोड़ता है। यह तंत्र अल्पकालिक खतरे के लिए उपयोगी है। परंतु यदि तनाव लगातार बना रहे, तो शरीर विश्राम अवस्था में लौट नहीं पाता। यह निरंतर सतर्कता नसों में कसाव पैदा कर सकती है।

2. Fight or Flight की निरंतरता : जब शरीर को बार-बार खतरे का संकेत मिलता है—चाहे वह वास्तविक हो या मानसिक—तो Nervous System सक्रिय रहता है। हृदय गति थोड़ी तेज श्वास थोड़ी उथली मांसपेशियाँ थोड़ी तनी यदि यह अवस्था वर्षों तक रहे, तो यह “नॉर्मल” लगने लगती है। पर यह सामान्य नहीं है। यह दीर्घकालीन तनाव है।

3. सूजन और भावनात्मक दबाव : आधुनिक विज्ञान भी संकेत देता है कि दीर्घकालीन तनाव शरीर में सूजन बढ़ा सकता है। जब व्यक्ति अपने भाव दबाता है—क्रोध, आहत होना, भय—तो शरीर लगातार तनाव संकेत प्राप्त करता है। यह आंतरिक असंतुलन ऊर्जा के प्रवाह को बाधित कर सकता है।

4. नसों का कसाव : जब ऊर्जा मुक्त रूप से प्रवाहित नहीं होती, तो नसों और मांसपेशियों में कसाव बना रहता है। गर्दन जकड़ी हुई कंधे भारी पीठ तनी निचला भाग कठोर यह सब केवल शारीरिक मुद्रा नहीं है—यह जीवन की मानसिक मुद्रा भी है।

5. दमन और बीमारी : यदि व्यक्ति हर बार कहे—“कुछ नहीं हुआ।” “मैं ठीक हूँ।” “मुझे फर्क नहीं पड़ता।” तो वह भीतर की प्रतिक्रिया को दबा रहा है। दमन अस्थायी शांति देता है, पर दीर्घकाल में ऊर्जा को जमा देता है। जमा हुई ऊर्जा सूजन या थकान में बदल सकती है।

6. शरीर की बुद्धि : शरीर मूर्ख नहीं है। वह संकेत देता है। यदि नसों में कसाव है, तो पूछें—क्या मैं लगातार सतर्क हूँ? क्या मैं आराम में नहीं जा पा रहा? क्या मैं हर स्थिति को खतरे की तरह ले रहा हूँ? यह प्रश्न शरीर को सुनने की शुरुआत है।

7. विश्राम की आवश्यकता : दीर्घकालीन कसाव का उपचार केवल दवा नहीं है। (दवा आवश्यक हो सकती है, पर पर्याप्त नहीं।) शरीर को वास्तविक विश्राम चाहिए। गहरी श्वास धीमी चाल मौन का समय अनुभव को स्वीकार करना जब Nervous System सुरक्षित महसूस करता है, तो कसाव ढीला पड़ता है।

8. साक्षी और शारीरिक उपचार : जब व्यक्ति सजग होकर अपने शरीर में संवेदनाओं को देखता है, तो तनाव की तीव्रता कम हो सकती है। जकड़न को बदलने की कोशिश न करें। पहले उसे महसूस करें। जहाँ ध्यान जाता है, वहाँ ऊर्जा प्रवाहित होती है।

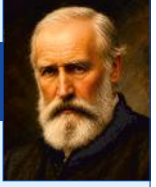
9. करुणा की भूमिका : यदि शरीर में सूजन या तनाव है, तो स्वयं को दोष न दें। “मैंने ही किया।” “यह मेरी गलती है।” यह दृष्टि तनाव बढ़ाती है। करुणा रखें—“मैं लंबे समय से सतर्क था।” “मुझे विश्राम की आवश्यकता है।” यह नरमी उपचार का आधार है।

10. अंतिम स्पष्टता : नसों का कसाव और सूजन केवल जैविक नहीं हो सकते। वे लंबे समय के मानसिक और भावनात्मक तनाव से भी जुड़े हो सकते हैं। जब सजगता मन में आती है और विश्राम शरीर में उतरता है, तो ऊर्जा संतुलित होने लगती है। अगले अध्याय में हम समझेंगे—Nervous system और Fight or Flight प्रतिक्रिया कैसे पूरे प्रमाद-चक्र को सक्रिय रखते हैं। (क्रमशः)

जैन दर्शन के विदेशी विद्वान श्रृंखला

विलियम सिम्पसन : स्थानकवासी जैन साधु परम्परा को विश्व-पटल पर चित्रित करने वाले प्रथम विदेशी कला इतिहासकार

— प्रोफेसर डॉ. ब्रांचल जैन



उन्नीसवीं शताब्दी में जब यूरोप भारत को मुख्यतः रहस्य, राजसत्ता और प्राचीन स्मारकों की भूमि के रूप में देखता था, तब स्कॉटलैंड के एक कलाकार ने भारत की आध्यात्मिक आत्मा को अपनी कुंजी से विश्व के समक्ष प्रस्तुत किया। यह कलाकार था—विलियम सिम्पसन (1823-1899), जिसे कला-जगत “क्राइमिया सिम्पसन” के नाम से जानता है।

28 अक्टूबर 1823 को स्कॉटलैंड के ग्लासगो में जन्मे सिम्पसन ने अक्टूबर 1859 में भारत की यात्रा आरम्भ की। अगले कई वर्षों तक उन्होंने भारत के विभिन्न प्रांतों का भ्रमण किया और यहाँ की सभ्यता, स्थापत्य तथा धार्मिक परम्पराओं का अध्ययन किया। इसी दौरान उनका परिचय जैन धर्म से हुआ। जैन धर्म की अहिंसा, संयम, तप और वैराग्य की परम्परा ने उन्हें अत्यन्त प्रभावित किया।

सिम्पसन का जैन इतिहास में सबसे महत्वपूर्ण योगदान उनका 1867 में प्रकाशित प्रसिद्ध रंगीन



शहजाद राय शोध संस्थान, बड़ौता में संग्रहित विलियम द्वारा बनाया गया स्थानकवासी जैन मूर्ति का विश्व में प्रकाशित प्रथम लिथोग्राफ चित्र।

क्रोमोलिथोग्राफ “Jain Priests” है, जो उनकी चर्चित कृति India Ancient and Modern में प्रकाशित हुआ था। उपलब्ध कला-ऐतिहासिक साक्ष्यों के आधार पर यह विश्व में प्रकाशित स्थानकवासी जैन साधुओं के सर्वप्रथम रंगीन लिथोग्राफों में से एक माना जाता है। विशेष महत्त्व की बात यह है कि चित्र में साधुओं के मुख पर स्पष्ट रूप से मुहपत्ती अंकित है। इतिहासकार एवं कला-अध्येता इसे स्थानकवासी जैन साधुओं का विश्व स्तर पर प्रकाशित प्रथम दृश्य दस्तावेज मानते हैं।

यह चित्र केवल एक कलाकृति नहीं, बल्कि जैन साधु जीवन का ऐतिहासिक अभिलेख है। पहली बार

यूरोप और पश्चिमी जगत ने इस चित्र के माध्यम से जैन मुनियों के तप, त्याग, अहिंसा और जीव-दया के सिद्धांतों को दृश्य रूप में देखा। ब्रिटिश विवरणों में भी उल्लेख मिलता है कि जैन साधु मुख पर वस्त्र धारण करते हैं ताकि सूक्ष्म जीवों की हिंसा से बचा जा सके।

विलियम सिम्पसन ने केवल जैन साधुओं का चित्रण ही नहीं किया, बल्कि एल्लोरा की जैन गुफाओं, जैन स्थापत्य, तीर्थंकर प्रतिमाओं और भारतीय जैन संस्कृति के अनेक आयामों को भी अपनी कला में अमर कर दिया। 1866 तक वे लगभग 250 जलरंग चित्र तैयार कर चुके थे, किन्तु उनके प्रकाशक ‘Day and Sons’ के दिवालिया हो जाने से उनकी विशाल परियोजना पूर्ण रूप से प्रकाशित नहीं हो सकी। स्वयं सिम्पसन ने इसे अपने जीवन की सबसे बड़ी निराशा बताया।

17 अगस्त 1899 को लंदन में उनका निधन हुआ, किन्तु उनकी कला आज भी जीवित है। लंदन के प्रतिष्ठित संग्रहालयों में सुरक्षित उनके चित्र न केवल उन्नीसवीं शताब्दी के भारत का दृश्य इतिहास हैं, बल्कि जैन धर्म के वैश्विक परिचय के भी महत्वपूर्ण दस्तावेज हैं।

यदि आज जैन समाज अपने धार्मिक इतिहास के उन विदेशी मित्रों को स्मरण करता है जिन्होंने बिना किसी स्वार्थ के जैन दर्शन की महिमा को विश्व तक पहुँचाया, तो विलियम सिम्पसन का नाम उनमें अत्यन्त सम्मान के साथ लिया जाना चाहिए। उन्होंने अपनी कुंजी से केवल चित्र नहीं बनाए, बल्कि जैन अहिंसा और वैराग्य को विश्व संस्कृति का हिस्सा बना दिया।

परिवार : संस्कार, संस्कृति और समाज की आधारशिला

— शिवा संदीप जैन—राष्ट्रीय महिला महाअंम्री, लुधियाना

मानव जीवन की सबसे पहली पाठशाला परिवार है। जन्म के बाद व्यक्ति जिस वातावरण में सबसे पहले प्रवेश करता है, वह परिवार ही होता है। परिवार केवल रक्त संबंधों का समूह नहीं, बल्कि संस्कारों, मूल्यों, प्रेम, सहयोग और उत्तरदायित्व की वह संस्था है जो व्यक्ति के सम्पूर्ण व्यक्तित्व का निर्माण करती है। किसी भी समाज और राष्ट्र की मजबूती का आधार उसके परिवार होते हैं। यदि परिवार मजबूत है तो समाज मजबूत है, और यदि परिवार कमजोर हो जाए तो समाज की नींव भी कमजोर पड़ने लगती है।

भारतीय संस्कृति में परिवार को सदैव विशेष महत्व दिया गया है। हमारे यहाँ परिवार केवल आर्थिक व्यवस्था का माध्यम नहीं, बल्कि संस्कारों के संरक्षण और हस्तांतरण का केंद्र माना गया है। सत्य, अहिंसा, करुणा, सेवा, बड़ों का सम्मान, अनुशासन और त्याग जैसे जीवन मूल्य पुस्तकों से अधिक परिवार के वातावरण से सीखे जाते हैं।

आज का समय तीव्र परिवर्तन का समय है। विज्ञान और तकनीक ने जीवन को सुविधाजनक बनाया है, लेकिन इसके साथ अनेक सामाजिक चुनौतियाँ भी उत्पन्न हुई हैं। संयुक्त परिवारों का स्वरूप छोट्टा हुआ है, पारिवारिक संवाद कम हुआ है और डिजिटल माध्यमों का प्रभाव लगातार बढ़ा है। परिवार के सदस्य एक ही घर में रहते हुए भी अनेक बार अपने-अपने संसार में व्यस्त दिखाई देते हैं। ऐसे समय में परिवार की भूमिका और अधिक महत्वपूर्ण हो जाती है।

विशेष रूप से बच्चों के व्यक्तित्व निर्माण में परिवार का योगदान सबसे अधिक होता है। बच्चे वही सीखते हैं जो वे अपने आसपास देखते हैं। यदि परिवार में प्रेम, सहयोग, अनुशासन और सम्मान का वातावरण होगा तो वही संस्कार बच्चों में विकसित होंगे। यदि परिवार में तनाव, कटुता और संवादहीनता होगी तो उसका प्रभाव भी बच्चों के व्यक्तित्व पर अवश्य पड़ेगा।



R. Mahaveer Chand Ranka

राष्ट्रीय प्रमुख मार्गदर्शक - जैन कॉन्फ्रेंस

9444204046

E mail : rmrjainplr@gmail.com



JAIN JEWELLERY
915 HALL MARK SHOWROOM
PULUR

JAIN PETRO
Refillable Petroleum Retail Outlet,
Goverment Road, Pulur 606-003



JAIN
SALKS & READYMADES
Fashion for Family
PULUR

OXFORD
MATRIC HR. SEC SCHOOL
OXFORD ROAD, PULUR 606-003



varanasi
FOUR STAR HOTEL, GATEWAY
PULUR & TRIVANAMALI & VELUPURAM

OXFORD
COLLEGE OF ENGINEERING PULUR
OXFORD ROAD, PULUR



M. Rajeshkumar Ranka

प्रांतीय महाअंम्री - जैन कॉन्फ्रेंस, तमिलनाडु

9994916455

E mail : rajplr246j@gmail.com

परिवार : समाज निर्माण की पहली इकाई

- नरेश बोहरा जैन-राष्ट्रीय वार्डस चैयरमैन, मुंबई

समाज और राष्ट्र का निर्माण किसी संस्था या व्यवस्था से नहीं, बल्कि परिवार से प्रारंभ होता है। परिवार वह स्थान है जहाँ व्यक्ति जीवन के प्रथम संस्कार प्राप्त करता है। सत्य बोलना, बड़ों का सम्मान करना, सहयोग की भावना रखना और कर्तव्य का पालन करना जैसे जीवन मूल्य परिवार की गोद में ही विकसित होते हैं।

आज आधुनिक जीवनशैली के कारण परिवारों के सामने अनेक चुनौतियाँ हैं। व्यस्त दिनचर्या, बढ़ता डिजिटल प्रभाव और सीमित पारिवारिक संवाद बच्चों के व्यक्तित्व को प्रभावित कर रहे हैं। ऐसे समय में परिवार को केवल रहने का स्थान नहीं, बल्कि संस्कारों का केंद्र बनाना आवश्यक है। यदि परिवार में प्रेम, संवाद, अनुशासन और परस्पर सम्मान का वातावरण बना रहे, तो बच्चों का व्यक्तित्व स्वतः सुदृढ़ बनता है। संस्कारित परिवार ही संस्कारित समाज की नींव रखते हैं। इसलिए प्रत्येक परिवार को अपनी अगली पीढ़ी को केवल सुविधाएँ ही नहीं, बल्कि श्रेष्ठ संस्कार भी प्रदान करने चाहिए।

नई पीढ़ी और भारतीय संस्कार

- अमित कांतिकुमार लोढा जैन-राष्ट्रीय युवा महामंत्री, छत्रपति संभाजीनगर

आज का युवा ज्ञान, तकनीक और अवसरों की दृष्टि से पहले की अपेक्षा अधिक सक्षम है। आवश्यकता केवल इस बात की है कि उसकी ऊर्जा को सही दिशा प्रदान की जाए। शिक्षा व्यक्ति को योग्य बनाती है, जबकि संस्कार उसे महान बनाते हैं। भारतीय संस्कृति ने सदैव परिवार, सेवा, संयम, करुणा और नैतिक मूल्यों को जीवन का आधार माना है। यदि युवा पीढ़ी इन मूल्यों से जुड़ी रहे, तो वह न केवल अपने परिवार का बल्कि समाज और राष्ट्र का भी गौरव बन सकती है।

माता-पिता, शिक्षक और सामाजिक संस्थाओं की जिम्मेदारी है कि वे युवाओं को सकारात्मक वातावरण प्रदान करें। धार्मिक, सांस्कृतिक और सेवा गतिविधियों में युवाओं की भागीदारी बढ़ाकर उनमें नेतृत्व और सामाजिक उत्तरदायित्व की भावना विकसित की जा सकती है। संस्कार और आधुनिकता का संतुलन ही भविष्य के भारत की सबसे बड़ी शक्ति बनेगा।

संवाद : मजबूत परिवारों की आधारशिला

- सुदर्शन जैन-जन कल्याण योजना राष्ट्रीय चैयरमैन, दिल्ली

किसी भी परिवार की वास्तविक शक्ति उसके सदस्यों के बीच संवाद और विश्वास में निहित होती है। जहाँ संवाद होता है, वहाँ समस्याएँ समाधान में बदल जाती हैं और जहाँ संवाद समाप्त हो जाता है, वहाँ छोटी-छोटी बातें भी दूरी का कारण बन जाती हैं।

आज तकनीक ने लोगों को जोड़ा भी है और कई बार दूर भी कर दिया है। परिवार के सदस्य एक ही घर में रहते हुए भी अपने-अपने उपकरणों में व्यस्त दिखाई देते हैं। ऐसे समय में परिवार के लिए कुछ समय एक साथ बैठना, विचार साझा करना और एक-दूसरे को सुनना अत्यंत आवश्यक हो गया है। संवाद केवल शब्दों का आदान-प्रदान नहीं, बल्कि संबंधों को सशक्त बनाने का माध्यम है। जब परिवार में प्रेमपूर्वक संवाद होता है, तो बच्चों में आत्मविश्वास बढ़ता है, बुजुर्गों को सम्मान मिलता है और परिवार में आत्मियता बनी रहती है। स्वस्थ संवाद ही सुखी और संस्कारित परिवारों की पहचान है।

(पृष्ठ 8 का शेष 'स्थानकवासी जैन कॉन्फ्रेंस के गौरवशाली महापुरुष श्रृंखला')

वे मानते थे कि समाज की आध्यात्मिक चेतना का मूल स्रोत साधु-संत ही हैं। इसलिए उन्होंने जीवनभर संत-समाज और श्रावक समाज के मध्य सुदृढ़ सेतु का कार्य किया। अनेक धार्मिक आयोजनों, चातुर्मासों, सम्मेलनों और संघीय कार्यक्रमों की सफलता के पीछे उनका मौन परंतु प्रभावशाली योगदान रहा।

श्री दुर्लभजी भाई जवेरी के साथ प्रेरक प्रसंग : श्री धीरजमलभाई तुरखिया के व्यक्तित्व की महानता का अनुमान इस तथ्य से भी लगाया जा सकता है कि वे अपने समय के अन्य महान समाजपुरुषों के साथ मिलकर कार्य करने में विश्वास रखते थे। धर्मवीर श्री दुर्लभजी भुवनदास जवेरी जैसे दानवीर और संगठन पुरुषों के साथ उनका निकट सहयोग स्थानकवासी समाज के इतिहास का महत्वपूर्ण अध्याय है।

कहा जाता है कि जब किसी संस्था अथवा धार्मिक परियोजना के लिए संसाधनों की आवश्यकता उत्पन्न होती थी, तब श्री दुर्लभजी

भाई अपनी उदारता और दानशीलता से सहयोग प्रदान करते थे, जबकि श्री तुरखिया अपनी संगठनात्मक क्षमता, प्रशासनिक दक्षता और कार्यान्वयन कौशल से उस योजना को सफल बनाते थे। यह दोनों मित्रों का युग उस कालखंड में समाज-सेवा और संस्था-निर्माण का आदर्श उदाहरण बन गया था।

दोनों महापुरुषों में एक समान विशेषता थी-व्यक्तिगत प्रसिद्धि से अधिक समाजहित को महत्व देना। यही कारण है कि उनके द्वारा किए गए कार्य आज भी समाज की अमूल्य धरोहर माने जाते हैं।

स्थानकवासी जैन कॉन्फ्रेंस की स्थापना एवं विकास में योगदान : श्री तुरखिया ने जैन कॉन्फ्रेंस की गतिविधियों को राष्ट्रीय स्तर पर सशक्त बनाने में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। विभिन्न अधिवेशनों, महासम्मेलनों और संगठनात्मक बैठकों में उनकी सक्रिय उपस्थिति रहती थी। वे केवल सहभागी नहीं, बल्कि विचार और दिशा देने वाले व्यक्तित्व थे।

शिक्षा, साधु-साध्वी कल्याण, संगठन विस्तार, धार्मिक साहित्य

बहुत कठिन डगर है, बताओ किसकी, बताओ तो जाने ?

- राकेश कुमार जैन, मेरठ

तारीफ की, ये भी एक कला है जो हर किसी को नहीं आती है। तारीफ करना खतरे का काम है। ऐसा जोखिम उठाना सबके बस की बात नहीं है। शब्दों का संतुलन बिगड़ते ही काम भी बिगड़ जाएगा। हम सभी मानते हैं कि किसी के भी अच्छे कार्य के लिए उसकी समुचित तारीफ अवश्य होनी चाहिए। अगर हम उसकी तारीफ नहीं करते हैं तो उसके साथ बेइन्साफी होगी। लेकिन तारीफ करना खतरे का काम है, ऐसा जोखिम उठाना हर किसी के बस की बात नहीं है। काजल को कालिख बनते देर नहीं लगती।

अतः तारीफ करना भी एक कला है, इसमें संयम

और संतुलन बहुत जरूरी है। इस कला को सीखने के प्रयास में मैंने इसे बला के रूप में झेला है। तारीफ मनुष्य की सबसे बड़ी दुर्बलता है। पर ये एक संजीवनी का कार्य करती है, ये किसी का भी ध्यान खींच सकती है।

आइए इस कला को सीखें और प्रगति की तरफ कदम बढ़ाएं। देखेंगे कि आपका जीवन गुलाब की भांती सुंदर हो जाएगा और जिसके पास भी बैठोगे, खुशनुमा माहौल आपकी प्रतीक्षा कर रहा होगा, प्रेम, आदर, स्तुति, मान सम्मान भरपूर मिलेगा, फिर चाहे परिवार हो, समाज हो, मित्र हो या परिचित हो।

शब्दों का संतुलन बिगड़ते ही काम भी बिगड़ जाएगा। हम सभी मानते हैं कि किसी के भी अच्छे कार्य के लिए उसकी समुचित तारीफ अवश्य होनी चाहिए।

(पृष्ठ 1 का शेष 'सम्पादकीय')

यह भी स्मरण रखना चाहिए कि जैन समाज केवल अपने धार्मिक जीवन तक सीमित समुदाय नहीं है। मुंबई और महाराष्ट्र में जैन समाज द्वारा संचालित अस्पताल, छात्रावास, शिक्षण संस्थाएँ, धर्मार्थ चिकित्सालय, अन्नक्षेत्र, वृद्ध सेवा केंद्र और अनेक सामाजिक संस्थाएँ प्रतिवर्ष लाखों लोगों को सेवाएँ प्रदान करती हैं। इन सेवाओं का लाभ केवल जैन समाज नहीं बल्कि मराठी, गुजराती, उत्तर भारतीय, दक्षिण भारतीय तथा सभी वर्गों के नागरिक समान रूप से प्राप्त करते हैं।

यदि वस्तुनिष्ठ अध्ययन किया जाए तो यह स्पष्ट होगा कि स्वास्थ्य, शिक्षा और समाजसेवा के क्षेत्र में जैन समाज का योगदान अत्यंत व्यापक है। जैन समाज द्वारा जनकल्याण पर व्यय की जाने वाली राशि प्रतिवर्ष करोड़ों और अनेक मामलों में अरबों रुपये के स्तर तक पहुँचती है। इसलिए किसी भी राजनीतिक नेतृत्व को किसी समुदाय के संबंध में वक्तव्य देते समय उसके सामाजिक योगदान का भी निष्पक्ष मूल्यांकन करना चाहिए।

जैन समाज की विशेषता यह रही है कि उसने कभी टकराव की राजनीति नहीं की। वह अपने

साधु-साध्वियों की तपस्या में सहयोग करता है, परंतु साथ ही यह भी सुनिश्चित करता है कि अन्य समाजों और संप्रदायों को किसी प्रकार की असुविधा न हो। जैन दर्शन का मूल ही सह-अस्तित्व और परस्पर सहयोग है। "परस्परप्रगल्भो जीवानाम्" का सिद्धांत केवल धार्मिक वाक्य नहीं, बल्कि जैन जीवनदृष्टि का आधार है।

आज आवश्यकता इस बात की है कि राजनीतिक नेतृत्व क्षणिक लोकप्रियता के लिए सामाजिक विभाजन का मार्ग न अपनाए। महाराष्ट्र की पहचान उदारता, सहिष्णुता और विविधताओं के सम्मान से रही है। उस भूमि पर किसी भी समुदाय के प्रति कटुता का वातावरण बनाना न महाराष्ट्र के हित में है और न भारत की लोकतांत्रिक भावना को।

हम मानते हैं कि मतभेद हो सकते हैं, प्रश्न उठाए जा सकते हैं, परंतु किसी तपस्वी साधु की पीड़ा को समझने के बजाय उसे राजनीतिक विवाद का विषय बना देना भारतीय संस्कृति की उस करुणा-परंपरा के विपरीत है, जिस पर हम सब गर्व करते हैं।

आज आवश्यकता आरोपों की नहीं, संवेदना की है, टकराव की नहीं, संवाद की है और राजनीति की नहीं, भारतीयता की है।

तथा समाज-सुधार के विषयों पर उनके विचारों को गंभीरता से सुना जाता था। उन्होंने गुजरात, महाराष्ट्र, राजस्थान, पंजाब तथा दक्षिण भारत के विभिन्न क्षेत्रों में संगठनात्मक गतिविधियों को प्रोत्साहित करने में उल्लेखनीय योगदान दिया।

श्री धीरजमलभाई तुरखिया का जीवन स्थानकवासी जैन समाज की संगठनात्मक चेतना, सेवा-भावना और श्रमण-भक्ति का जीवंत उदाहरण है। उन्होंने शिक्षा, संस्था-निर्माण, जैन कॉन्फ्रेंस, श्रमण संघ और साधु-संतों की सेवा के क्षेत्र में जो अमूल्य योगदान दिया, वह आने वाली पीढ़ियों के लिए प्रेरणास्रोत बना रहेगा।

वस्तुतः वे उन महापुरुषों में थे जिन्होंने यह सिद्ध किया कि समाज का वास्तविक नेतृत्व पदों से नहीं, बल्कि सेवा, समर्पण और कर्तव्यनिष्ठा से प्राप्त होता है। स्थानकवासी जैन कॉन्फ्रेंस के गौरवशाली महापुरुषों की श्रृंखला में श्री धीरजमलभाई तुरखिया का नाम सदैव अत्यंत सम्मान और आदर के साथ स्मरण किया जाएगा।

(शहजाद राय शोध संस्थान, बड़ौता में संग्रहित शोध सामग्री के आधार पर)

ARB WATER WORLD

Fun • Food • Relax

Haryana Oil Corporation
IOC Dealer

108 Mile Stone, Opp. Liberty Complex,
G.T. Road, Gharaunda (Karnal)

विनय कुमार जैन
राष्ट्रीय कोषाध्यक्ष
जैन कॉन्फ्रेंस, नई दिल्ली
8607500001, 8396800000

S.K. Jain
Deals in: Ferrous Non Ferrous &
All Kinds of Industrial Scrap

अंकुर जैन
राष्ट्रीय युवा चैयरमैन
जैन कॉन्फ्रेंस, नई दिल्ली

NAMOKAR METALS

Plot No.-5, SarurPur Ind. Area.
Nangla gujran, Near Nagar chowk, Faridabad
E-mail : namokarmetals@gmail.com Mobile : 9811601241

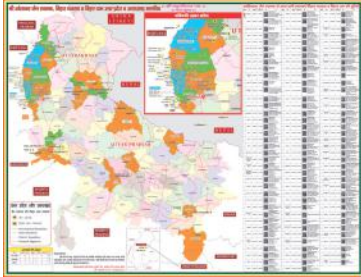
जैन कॉन्फ्रेंस युवा शाखा, उत्तर प्रदेश/उत्तराखंड द्वारा साधु-साध्वी विहार यात्रा मानचित्र का निर्माण एवं उत्तर प्रदेश के सभी स्थानकों में स्थापना



मुझे युवा शाखा उत्तर प्रदेश/उत्तराखंड का प्रदेश अध्यक्ष बनने का अवसर प्राप्त हुआ, तब ऐसा कार्य करने का संकल्प लिया जो हमारे पूज्य संत-साध्वियों के विहार मार्ग को अधिक सुगम एवं सुविधाजनक बना सके।

उत्तर प्रदेश एवं उत्तराखंड क्षेत्रफल की दृष्टि से अत्यंत विशाल प्रदेश हैं। सभी स्थानकों एवं विहार व्यवस्थाओं की संपूर्ण जानकारी उपलब्ध नहीं थी। इसी उद्देश्य से मार्च 2025 माह से हमने एक विशेष अभियान का शुभारंभ किया। इस अभियान के अंतर्गत हमने स्वयं उत्तर प्रदेश एवं उत्तराखंड के सभी स्थानकों का भ्रमण किया।

इस पुण्य कार्य में मेरे छोटे भाई श्रेयांश जैन ने प्रत्येक चरण में मेरा सहयोग किया तथा सम्पूर्ण यात्रा में मेरे साथ रहे। इस दौरान हमने लगभग 17,000 किलोमीटर की यात्रा कर प्रत्येक स्थानक, विहार व्यवस्था एवं विहारधाम की विस्तृत जानकारी एकत्रित की। इसके पश्चात संकलित जानकारी के आधार पर एक विस्तृत



गुणवत्ता वाली एक्सेलिक शीट पर तैयार करवाकर संबंधित स्थानक में स्थापित करवाने का प्रयास करेंगे।

यह कार्य केवल एक मानचित्र नहीं, बल्कि गुरु भगवतों की सेवा, विहार-सुविधा एवं सम्पूर्ण समाज को एक सूत्र में जोड़ने का विनम्र प्रयास है।

- पुनीत जैन, उत्तर प्रदेश प्रांतीय युवा अध्यक्ष

विहार मानचित्र (Vihar Map) तैयार किया गया है। इस मानचित्र में प्रत्येक स्थानक का पूर्ण पता, एक स्थानक से दूसरे स्थानक तक की पैदल एवं वाहन मार्ग की सटीक जानकारी तथा विहार संबंधी आवश्यक विवरण सम्मिलित हैं। हमारा प्रयास है कि यह मानचित्र संत-साध्वियों के विहार में अत्यंत उपयोगी सिद्ध हो तथा उन्हें किसी प्रकार की असुविधा का सामना न करना पड़े।

वर्तमान में इस मानचित्र को विभिन्न स्थानकों में स्थापित किया जा रहा है। जिन श्रीसंघों की इच्छा हो कि यह मानचित्र उनके स्थानक में भी लगाया जाए, वे हमसे संपर्क कर सकते हैं। हम इसे 4 फीट × 3 फीट आकार की उच्च

प्रवर्तक पू. श्री अम्बालाल जी. म. की 121वीं जन्म जयंती मनाई गई

चित्तौड़गढ़ (राजस्थान) : श्रमण संघीय

उपाध्याय प्रवर पूज्य गुरुदेव श्री गौतम मुनि जी म. आदि ठाणा, जैन सिद्धांताचार्य पू. श्री प्रतिभा जी म. आदि ठाणा व महासाध्वी पू. श्री धैर्यप्रभा जी म. आदि ठाणा के सान्निध्य में चित्तौड़गढ़ मीरानगर जैन सामायिक भवन में बुधवार को मेवाड़ संघ शिरोमणि पूज्य प्रवर्तक गुरुदेव श्री अंबालाल जी म. की 121वीं जन्म जयंती व राजस्थान प्रवर्तनी पू. गुरुणी श्री यशकुंदर जी म. का 89वां दीक्षा दिवस सामायिक व सामूहिक एकासन के रूप में मनाया गया।

धर्मसभा में अपने धर्म संदेश में उपाध्याय प्रवर श्री गौतम मुनि जी म. ने कि जिनशासन को जिंदा रखना है तो हम सभी को ऊपर उठकर संघ, समाज, परिवार, राष्ट्र में समन्वय तथा सद्भाव, प्रेम का बीजारोपण करना होगा। आगमकार श्री वैभव मुनि ने युवाओं को धर्म के प्रति रुचि पैदा करने का आह्वान किया।

धर्म सिंहनी धैर्यप्रभा जी म. ने गुरुओं के जन्म जयंती प्रसंग पर अवगुणों को त्याग करने का संकल्प लेने का आह्वान किया। धर्मसभा में जैन सिद्धान्ताचार्य पू. श्री प्रतिभाश्री जी म. ने भी मेवाड़ प्रवर्तक गुरुदेव श्री अम्बालाल जी म. के संयमित और प्रभावी जीवन के बारे में विस्तृत जानकारी दी। मीरानगर और अध्यक्ष सुशील अब्बाणी, मंत्री निर्मल चंडालिया ने सभी अतिथियों का स्वागत किया।

प्रेषक : पवन जैन पटवारी



जैन कॉन्फ्रेंस युवा शाखा तमिलनाडु द्वारा 100वें जीवदया कार्यक्रम का सफल आयोजन

विजयवाड़ा (तमिलनाडु) : जैन कॉन्फ्रेंस युवा शाखा तमिलनाडु द्वारा 100वें जीवदया कार्यक्रम का सफल आयोजन विजयवाड़ा स्थित पावन हिकार तीर्थ पर किया गया। यात्रा का शुभारंभ चेन्नई सेंट्रल रेलवे स्टेशन से हुआ। यह कार्यक्रम जीवमात्र के प्रति करुणा, सेवा और अहिंसा के जैन सिद्धांतों को समर्पित रहा। इस ऐतिहासिक उपलब्धि के माध्यम से संगठन ने जीवदया के क्षेत्र में अपनी सतत् सेवाओं का एक महत्वपूर्ण पड़ाव पूर्ण किया।

इस दौरान सभी सदस्यों ने श्री महावीर गौशाला का भ्रमण किया तथा जीवदया की भावना को साकार



करते हुए गौमाता की सेवा हेतु दो दिनों के हरे चारे (घास) का प्रयोजन किया। यह सेवा कार्य सभी के लिए अत्यंत प्रेरणादायक एवं पुण्यदायी रहा तथा जीवों के प्रति करुणा एवं सेवा के संदेश को और अधिक सशक्त बनाया।

प्रेषक : मनीष रांका जैन

दिल्ली में वयोवृद्ध श्रावक का महिला शाखा द्वारा स्वागत अभिनंदन

दिल्ली : दिनांक 20 जून को श्री ऑल इंडिया जैन श्वेताम्बर स्थानकवासी राष्ट्रीय महिला अध्यक्षा श्रीमती संतोष जैन के सान्निध्य में प्रांतीय महिला शाखा की ओर से दिल्ली के श्याम नगर निवासी श्रीमान राकेश जैन के पिताजी सबसे वरिष्ठ वयोवृद्ध श्रावक 103 वर्षीय श्रीमान श्रीचंद जैन गद्दी जिज्ञासा का स्वागत अभिनंदन किया गया। इस अवसर पर उनके तीनों सुपुत्र, पुत्रवधु, सुपुत्री, उनके पौत्र-पौत्रवधु, पडपौत्रों के साथ-साथ राष्ट्रीय महिला कोषाध्यक्षा श्रीमती उर्मिल जैन, प्रांतीय महिला अध्यक्षा श्रीमती सीमा जैन, प्रांतीय महिला महामंत्री श्रीमती कनिका जैन और श्रीमती समुद्री देवी उपस्थित रहे। यह पल बहुत ही भावुक रहे आदरणीय बाबूजी श्रीचंद की संघर्षमय जीवन यात्रा परिवार एवं समाज के लिए बहुत ही प्रेरणादायक है। प्रभु भगवान महावीर से उनके स्वस्थ जीवन के लिए विनती करते हैं। परिवार एवं समाज पर उनका आशीर्वाद हमेशा बना रहे।

प्रेषक : संतोष जैन

डॉ. सुलेख जैन को काशी हिंदी विद्यापीठ द्वारा डॉक्टरेट

हरियाणा जैन महासभा के वरिष्ठ सदस्य आदरणीय डॉ. सुलेख जैन (दिल्लोवाल परिवार) को काशी हिंदी विद्यापीठ द्वारा डॉक्टरेट की मानद उपाधि "विद्या वाचस्पति" सम्मान से अलंकृत किए जाने पर शुभकामनाएँ। यह सम्मान आपके ज्ञान, सामाजिक योगदान, समर्पण एवं उत्कृष्ट कार्यों का गौरवपूर्ण सम्मान है।

प्रेषक : दिल्लोवाल परिवार

जैन कॉन्फ्रेंस गुजरात शाखा द्वारा सरकारी हाईस्कूल में सेवा कार्यो का भव्य उद्घाटन

अहमदाबाद (गुजरात) :

श्री ऑल इंडिया श्वेताम्बर स्थानकवासी जैन कॉन्फ्रेंस, नई दिल्ली की गुजरात प्रांतीय शाखा के तत्वावधान में 14 जून को भव्यतिभय उद्घाटन एवं लोकप्रण समारोह का आयोजन अहमदाबाद के सरदारनगर, कोतरपुर स्थित श्री रेवाबा विद्याविहार हाईस्कूल के प्रांगण में संपन्न हुआ, जिसमें स्कूल के बुनियादी ढांचे को मजबूत करने और बच्चों के सर्वांगीण विकास के लिए चार महत्वपूर्ण सेवा कार्य राष्ट्र को समर्पित किए गए।

इनमें-STEMLAB (विज्ञान प्रयोगशाला): विज्ञान, तकनीक, इंजीनियरिंग और गणित की आधुनिक व व्यावहारिक शिक्षा के लिए।

विल्ड्रम पार्क एरिया : प्राथमिक व माध्यमिक वर्ग के बच्चों के खेल-कूद और शारीरिक विकास के लिए।

नये शेड का निर्माण : विद्यार्थियों को कड़कती धूप और बारिश से बचाने तथा सामूहिक प्रार्थना व सांस्कृतिक गतिविधियों के आयोजन के लिए।

वाटर कूलर : स्कूल परिसर में विद्यार्थियों के लिए स्वच्छ, शुद्ध और शीतल पेयजल की उत्तम व्यवस्था।



इन सभी लोक-कल्याणकारी और शैक्षणिक कार्यों का निर्माण अहमदाबाद के श्री मूलचंद खाव्या-श्रीमती चन्द्रकला खाव्या (अहमदाबाद), श्री लोकेश मादरेचा-श्रीमती लता मादरेचा (अहमदाबाद), श्री हेमेश कोठारी श्रीमती अल्का कोठारी (अहमदाबाद) के प्रतिष्ठित जैन परिवारों के विशेष सौजन्य उदारता और वित्तीय सहयोग से सुनिश्चित हुआ है।

इस अवसर पर ऐतिहासिक मांगलिक प्रसंग में अहमदाबाद शहर के कई गणमान्य नागरिकों, राजनेताओं और प्रमुख समाजसेवियों ने गरिमापूर्ण उपस्थिति दर्ज कराई। मुख्य अतिथि के रूप में माननीया श्रीमती अंजुबेन सी. शाह (डेयुटी मेयर, अहमदाबाद महानगर पालिका) रही। प्रमुख अतिथि श्री कुशलराज भंसाली - समाजसेवी एवं उद्योगपति तथा विशेष अतिथि श्रीमती मायाबेन उत्तमभाई जैन पार्षद शाहीबाग वार्ड रहे। कार्यक्रम के अंत में गुजरात जैन कॉन्फ्रेंस के चेयरमैन श्री लक्ष्मीलाल नाजर जैन ने सभी अतिथियों का आभार व्यक्त किया।



समाजसेवा दानवीर भामाराह
लाला आनन्द प्रकाश जी जैन
महिलासल
ख. श्रीमती कमलेश आनन्द प्रकाश जी जैन



देश में विराजित पूज्य संत-साध्वीजी म. के पावन चरणों में कोटि-कोटि वंदन एवं श्रद्धापूर्ण नमन

Namo e waste Management Ltd.
E waste & lithium in battery recycling
EPR facility
8130393628 admin@namoe-waste.com

Vardhman Recycling LLP
Old vehicles recycling with certificate of disposal
Plastic recycling EPR facility
8130393611 vardhmanautorecycling@gmail.com



नरेश आनन्दप्रकाश जैन
राष्ट्रीय अध्यक्ष
ज्ञान प्रकाश योजना, जैन कॉन्फ्रेंस



सवना नरेश जैन
राष्ट्रीय प्रमुख मार्गदर्शक
जैन कॉन्फ्रेंस, राष्ट्रीय महिला शाखा

स्थानकवासी जैन कॉन्फ्रेंस के गौरवशाली महापुरुष श्रृंखला...

समाज-सेवा, संगठन-साधना और श्रमण-भक्ति के अप्रतिम प्रतीक :
श्री धीरजमल केशवलाल भाई तुरखिया - प्रो. डॉ. अमिताय जैन

स्थानकवासी जैन समाज के इतिहास में कुछ व्यक्तित्व ऐसे हैं जिनका मूल्यांकन केवल उनके द्वारा संभाले गए पदों या प्राप्त सम्मानों से नहीं, बल्कि उनके द्वारा निर्मित संस्थाओं, प्रेरित कार्यकर्ताओं और समाज पर छोड़ी गई अमिट छाप से किया जाता है। श्री धीरजमलभाई केशवलालभाई तुरखिया ऐसे ही युगद्रष्टा समाजपुरुष थे। उन्होंने अपने जीवन को व्यक्तित्व यश अथवा प्रतिष्ठा का साधन न बनाकर समाज, धर्म और संघ की सेवा का माध्यम बनाया। यही कारण है कि आज भी उनका नाम स्थानकवासी जैन समाज में श्रद्धा, सम्मान और कृतज्ञता के साथ स्मरण किया जाता है।

सेवा ही जीवन का परम धर्म : श्री तुरखिया का व्यक्तित्व सादगी, विनम्रता, समयपालन और कर्तव्यनिष्ठा का अद्भुत संगम था। वे उन विरले समाजसेवियों में थे जो मंच पर कम और कार्यक्षेत्र में अधिक दिखाई देते थे। उनका विश्वास था कि व्यक्ति का वास्तविक परिचय उसके शब्दों से नहीं, बल्कि उसके कर्मों से होता है। यही कारण था कि उन्होंने अपने जीवन का अधिकांश भाग समाज-निर्माण, संस्था-विकास और धर्म-प्रभावना के कार्यों में समर्पित कर दिया।

उनका जीवन-दर्शन जैन धर्म की उस परंपरा का प्रतिनिधित्व करता है जिसमें सेवा को साधना और संगठन को धर्म-प्रभावना का प्रभावी माध्यम माना गया है। वे बार-बार इस बात पर बल देते थे कि यदि समाज को स्थायी रूप से सशक्त बनाना है तो शिक्षा, संगठन और संस्कार-इन तीनों क्षेत्रों में समान रूप से कार्य करना होगा।

जैन जागृति के सशक्त प्रहरी : बीसवीं शताब्दी के मध्यकाल में जब स्थानकवासी जैन समाज सामाजिक एवं संगठनात्मक पुनर्जागरण के दौर से गुजर रहा था, तब श्री तुरखिया ने अग्रिम पंक्ति में खड़े होकर इस जागरण को दिशा प्रदान की। जीवन के प्रारंभिक समय में मुंबई में रहते हुए उन्होंने अनेक सामाजिक, धार्मिक और शैक्षणिक गतिविधियों में सक्रिय सहभागिता निभाई। युवा वर्ग को संगठित करने, समाज में नई चेतना जगाने और संस्थागत विकास को गति देने में उनकी भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण रही।

वे केवल आयोजक नहीं थे, बल्कि समाज की भावी आवश्यकताओं को समझने वाले दूरदर्शी चिंतक भी थे। इसी कारण उन्हें विभिन्न संस्थाओं में नेतृत्वकारी उत्तरदायित्व सौंपे गए, जिन्हें उन्होंने पूर्ण निष्ठा और दक्षता के साथ निभाया।

जैन ट्रेनिंग कॉलेज : एक स्वयं का साकार रूप - श्री धीरजमलभाई तुरखिया का नाम जैन ट्रेनिंग कॉलेज रतलाम के इतिहास के साथ विशेष रूप से जुड़ा हुआ है। उन्होंने इस संस्था को केवल एक शैक्षणिक केंद्र नहीं, बल्कि समाज के भावी नेतृत्व के निर्माण की प्रयोगशाला के रूप में देखा। उनके कुशल संचालन,

अनुशासित प्रशासन और दूरगामी दृष्टिकोण के परिणामस्वरूप यह संस्था अनेक प्रतिभाशाली युवाओं के व्यक्तित्व-निर्माण का केंद्र बनी।

यह कहना अतिशयोक्ति नहीं होगी कि जैन ट्रेनिंग कॉलेज रतलाम से निकलने वाले अनेक युवक आगे चलकर समाज, शिक्षा और धर्मक्षेत्र के महत्वपूर्ण स्तंभ बने। इस उपलब्धि के पीछे श्री तुरखिया की संगठनात्मक क्षमता, सतत परिश्रम और शिक्षा के प्रति उनकी गहरी प्रतिबद्धता स्पष्ट रूप से दिखाई देती है।

जैन गुरुकुल और संस्थागत निर्माण के शिल्पी : श्री तुरखिया का एक अन्य महत्वपूर्ण योगदान जैन गुरुकुल और उससे संबंधित संस्थाओं के विकास में दिखाई देता है। उन्होंने आर्थिक संसाधनों के संग्रह, भवन-निर्माण, स्थायी निधियों की व्यवस्था और प्रशासनिक संरचना के सुदृढीकरण में उल्लेखनीय भूमिका निभाई। उनकी कार्यशैली की सबसे बड़ी विशेषता यह थी कि वे किसी भी संस्था के वर्तमान की नहीं, बल्कि उसके भविष्य की चिंता करते थे। उनके नेतृत्व में अनेक संस्थाएँ केवल स्थापित ही नहीं हुईं, बल्कि दीर्घकालीन स्थिरता और विकास का आधार भी प्राप्त कर सकीं।

श्री वर्धमान स्थानकवासी जैन श्रमण संघ की स्थापना में ऐतिहासिक भूमिका : स्थानकवासी जैन समाज के आधुनिक इतिहास की सबसे महत्वपूर्ण घटनाओं में से एक है श्री वर्धमान स्थानकवासी जैन श्रमण संघ की स्थापना। यह केवल एक संगठन का निर्माण नहीं था, बल्कि विभिन्न परंपराओं, गच्छों और भौगोलिक क्षेत्रों में विचरण करने वाले साधु-साधवियों तथा श्रावक समाज को एक व्यापक मंच पर संगठित करने का ऐतिहासिक प्रयास था।

श्री धीरजमलभाई तुरखिया इस महत्वपूर्ण अभियान के प्रमुख प्रेरक व्यक्तित्वों में से थे। उन्होंने श्रमण संघ की स्थापना को युगधर्म मानते हुए इसके लिए तन-मन और धन से योगदान दिया। वे भलीभाँति समझते थे कि संगठन की शक्ति के बिना धर्म की प्रभावना सीमित रह जाती है। अतः उन्होंने संत-समाज, श्रावक वर्ग और विभिन्न संस्थाओं के मध्य समन्वय स्थापित करने में सक्रिय भूमिका निभाई।

उनके अथक प्रयासों ने श्रमण संघ को केवल एक संगठन नहीं, बल्कि स्थानकवासी जैन समाज की एकता और सामूहिक चेतना का प्रतीक बनाने में सहायता प्रदान की।

साधु-संतों के प्रति अनन्य श्रद्धा : श्री तुरखिया का जीवन जैन श्रमण संस्कृति के प्रति गहन श्रद्धा से ओत-प्रोत था। वे अनेक आचार्यों, प्रवर्तकों, उपाध्यायों और साधु-साधवियों के सतत संपर्क में रहे। संतों के प्रति उनकी श्रद्धा केवल औपचारिक नहीं थी, बल्कि उनके आदर्शों को व्यवहार में उतारने की सच्ची साधना थी।

(शेष पृष्ठ 5 में)

जैन शौरव

अभिनन्दन वर्धमान



अभिनन्दन वर्धमान ने अपनी 10वीं तक की प्रारंभिक शिक्षा केन्द्रीय विद्यालय बेंगलोर से प्राप्त की, उच्च शिक्षा दिल्ली में पूरी की। आपके पिता भारतीय वायुसेना में थे। अभिनन्दन खड़क वासला स्थित राष्ट्रीय रक्षा एकेडमी के छात्र रहे हैं। विंग कमाण्डर अभिनन्दन (Wg Cdr. V Abhinandan) को मिंग-21 विमान बहुत प्रिय है और वह इस विमान के बहुत बड़े प्रशंसक हैं। उनके लड़ाकू विमान के क्षतिग्रस्त होने पर 27 फरवरी 2019 को पाकिस्तानी सेना ने उन्हें अपनी हिरासत में ले लिया था। दो दिनों से अधिक पाकिस्तानी हिरासत में रखने के बाद पाकिस्तान ने जिनेवा संधि के अन्तर्गत विंग कमाण्डर अभिनन्दन वर्धमान को 1 मार्च 2019 को छोड़ दिया। पूरे देश ने उनका स्वागत किया। कोई उनकी तुलना हनुमान जी से कर रहा था तो कोई वायुवीर कहकर अलंकृत कर रहा था। आपके दादा भी भारतीय सेना में थे, उन्होंने द्वितीय विश्वयुद्ध में भाग लिया था। आपके पिता का नाम एस. वर्धमान है जो भारतीय वायुसेना में एयरमार्शल थे। आपकी पत्नी सेवा निवृत्त स्क्वाड्रन लीडर तन्वी मारवाह ने भी भारतीय वायुसेना में 15 वर्षों तक सेवाएँ दी हैं। अभिनन्दन के भाई भी वायुसेना में हैं, आपकी तीन पीढ़ियाँ भारत की सेना से जुड़ी हैं। जैन वायुवीर का शत-शत अभिनन्दन।

NEET परीक्षा देने वाले
बच्चों के लिए एक प्रेरणादायक सेवा

NEET परीक्षा के बाद विद्यार्थियों और अभिभावकों के मन में सबसे बड़ा प्रश्न होता है - 'क्या Government Medical College मिल सकता है?' इसी आवश्यकता को ध्यान में रखते हुए जैन समाज के सदस्य एवं NEET Admission Expert राकेश जैन द्वारा एक निःशुल्क मोबाइल ऐप विकसित किया गया है - GMC or NOTA

यह ऐप बच्चे के Profile और NEET Score के आधार पर कुछ ही सेकंड में Government Medical College मिलने की संभावना बताता है, जिससे Counselling के दौरान सही निर्णय लेने में सहायता मिलती है। यह एक व्यावसायिक प्रचार नहीं, बल्कि विद्यार्थियों और अभिभावकों तक सही एवं उपयोगी जानकारी पहुँचाने का एक प्रयास है। यदि आपके परिवार, रिश्तेदारी या परिचितों में किसी विद्यार्थी ने इस वर्ष NEET परीक्षा दी है, तो कृपया यह संदेश उसके साथ अवश्य साझा करें। हो सकता है आपकी एक शेरार किसी विद्यार्थी को सही दिशा और उसके सपनों के मेडिकल कॉलेज तक पहुँचने में मदद कर दे। ज्ञान बाँटना भी सेवा है, और सही मार्गदर्शन देना भी।

GMC or NOT App
(GMC OR NOT for (Android):
<https://play.google.com/store/apps/details?id=in.mbbslighthouse.gmcornot>
GMC OR NOT for (iOS):
<https://apps.apple.com/in/app/mbbs-lighthouse-gps-to-mbbs/id6764387565>

विद्यार्थियों के उज्ज्वल भविष्य की मंगलकामनाओं सहित।



J. P. Jain Foundation

(स्व. श्री जय प्रकाश जैन की पुण्य स्मृति में स्थापित)

सेवा, करुणा और अहिंसा के मूल्यों को आत्मसात करते हुए समाज के अंतिम व्यक्ति तक सहयोग पहुँचाने के उद्देश्य से निम्न जनकल्याणकारी सेवा-कार्यों का सतत संचालन



अनवर जैन, अतुल जैन, अमित जैन

❁ जैन हेल्थकेयर सेंटर के माध्यम से निःस्वार्थ एवं समर्पित स्वास्थ्य सेवाएं।

❁ भिवानी में फूड बैंक द्वारा जरूरतमंदों को नियमित भोजन वितरण।

❁ दर्द निवारक - महाउपयोगी नाकोडा भैरव लाल तेल का देश भर में निःशुल्क वितरण।

❁ निर्धन विधवाओं एवं असहाय वर्गों को राशन सहायता।

❁ जीव-दया के संरक्षण एवं करुणा आधारित सेवा अभियान।

❁ साधर्म्य बंधुओं को हर प्रकार की सहायता।

📍 MATUSHRI BHAWAN, 537/5, Doodh Wali Gali, Mehrauli, New Delhi-110030 📞 9717524774 📧 Email: foundationjpjain@gmail.com

सम्पादकीय अस्वीकरण : 'जैन प्रकाश' में प्रकाशित समाचार, लेख एवं विचार संबंधित लेखकों/समाचार प्रेषकों/अन्य स्रोतों के निजी विचार हैं। उनकी सत्यता एवं प्रामाणिकता के लिए वही उत्तरदायी होंगे। संपादक एवं प्रकाशक किसी भी नृति, मानहानि या विवाद के लिए उत्तरदायी नहीं होंगे। यह प्रकाशन भारतीय प्रेस एवं पंजीकरण अधिनियम, 1867 तथा लागू भारतीय कानूनों के अंतर्गत है। किसी भी विवाद का न्याय क्षेत्र नई दिल्ली होगा। - डॉ. अमित जैन (सम्पादक/प्रकाशक)

श्री ऑल इंडिया श्वेताम्बर स्थानकवासी जैन कॉन्फ्रेंस (रजि.) के लिए सम्पादक एवं प्रकाशक अमित जैन द्वारा मुद्रक पारस ऑफसेट प्र.लि., 118-F, सेक्टर 56, फेज 5, कुडली इंडस्ट्रियल स्टेट, सोनीपत - 131 028 द्वारा मुद्रित।
केन्द्रीय कार्यालय : जैन भवन, 12, शहीद भगतसिंह मार्ग, गोल मार्केट, नई दिल्ली - 110 001 से प्रकाशित * सम्पर्क : 90197 31906